ISSN 2229-4406

International Registered and Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

(UGC Approved,Refereed & Peer Reviewed Research Journal)

Year -XV, Issue - XXX, Vol. - II (Hindi)

Impact Factor 6.70 (GRIFI)

March 2025 To Aug. 2025

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgaon (Kale) Tq. & Dist. Latur

Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki

Tq. & Dist. Dharashiv - 413508 (MS)

(NAAC Reaccredited A+ Grade with CGPA 3.36)

One Day National Seminar

Date : 20/ 03/2025

on

'राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण आणि भाषाभिमुख रोजगाराच्या संधी'

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भाषाभिमुख रोजगार के अवसर'

National Education Policy and Language Oriented Job Opportunities

Editor In Chief
Prin. Dr. Haridas Fere

Co - Editor
Dr. R. V. Kamble

Co - Editor
Dr. R. P. Jadhav

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgaon (Kale) Tq. & Dist. Latur

Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki

Tq. & Dist. Dharashiv - 413508 (MS)

(NAAC Reaccredited A+ Grade with CGPA 3.36)

Affiliated to
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University,
Chhatrapati Sambhajinagar (MS)

One Day National Seminar

on

'राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण आणि भाषाभिमुख रोजगाराच्या संधी'

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भाषाभिमुख रोजगार के अवसर'

National Education Policy and Language Oriented Job Opportunities

(20th March 2025)

Editor in Chief
Prin. Dr. Haridas Fere

Co - Editor
Dr. R. V. Kamble
Dr. R. P. Jadhav

Organized by
Department of Hindi

UGC Journal Details

Name of the Journal :	Universal Research Analysis
ISSN Number :	22294406
e-ISSN Number :	
Source:	UNIV
Subject:	Multidisciplinary
Publisher:	Jyotichandra Publication
Country of Publication:	India
Broad Subject Category:	Multidisciplinary

Print

IMPACT FACTOR
6.70

ISSN 2229-4406

UGC Approved International Registered & Recognized Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

URA UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

UGC APPROVED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue - XXX, Vol. II
Year - XV (Half Yearly)
March 2025 To Aug. 2025

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 8484818000
9423346913 / 9503814000
7276305000 / 7276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication
Latur, Dist. Latur - 413531. (MS)

Price : ₹ 300/-

CHIEF EDITOR

Dr. Haridas Fere
Principal
Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki
Tq. & Dist. Dharashiv. (M.S.)

CO- EDITOR

Dr. R. V. Kamble
Head., Dept. of Hindi
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

Dr. R. P. Jadhav
Dept. of Hindi
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

MEMBER OF EDITORIAL BOARD

Dr. B. N. Deshmukh
Dept. of Marathi
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

J. A. Lokhande
Asso. Prof. Dept. of Marathi
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

Dr. M. D. Shrimangale
Head., Dept. of English
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

S. V. Jogdand
Asst. Prof. Dept. of English
Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki, Tq. & Dist. Dharashiv

Dr. Pradeep Ingale
IQAC Co - ordinator
Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki.
Tq. & Dist. Dharashiv. (M.S.)

अ. क्र.	पेपरचे नांव	पृष्ठ क्र.
२१	हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर **डॉ. संजय जोशी**	८१
२२	अनुवाद और रोजगार के अवसर **डॉ. शिवाजी वडचकर**	८४
२३	अनुवाद की उपादेयता और रोजगार की संभावनाएँ **डॉ. सूर्यकांत शिंदे**	८८
२४	हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर **प्रा. डॉ. युवराज धवन**	९२
२५	हिन्दी में रोजगार के अवसर **डॉ. बाबा शेख**	९५
२६	हिन्दी भाषा और रोजगार **डॉ. अमर फकीर सय्यद**	९९
२७	विज्ञापन और रोजगार **डॉ. हणमंत पवार**	१०३
२८	भगवतीशरण मिश्र के उपन्यासों में राष्ट्रीय मूल्य **डॉ. विनयकुमार सुदामदेव चौधरी**	१०७
२९	राष्ट्रीय शिक्षा नीति व स्वरोजगार **ज्ञानेश्वरी गिरीधर पांचाळ**	११०
३०	अनुवाद में रोजगार की संभावनाएँ **तृप्ती सुरेश सोनवने**	११२
३१	हिंदी फिल्मों में देशभक्ति तथा राष्ट्रवाद का विकास **डॉ. ज्ञानेश्वर सोनेराव चिट्टमपल्ले**	११५
३२	अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएँ **भाग्यश्री नारायण कुंभार**	११८
३३	नई शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा और भाषा **साक्षी जितेंद्र पवार**	१२१
३४	हिंदी भाषा मे रोजगार के अवसर विशेष संदर्भ में अनुवाद **डॉ. राजकुमार पंडितराव जाधव**	१२५
३५	नई शिक्षा नीति में व्यावसायिक एवं रोजगार की परिकल्पना **डॉ. रमेश विठोबा कांबळे**	१२८
३६	आदान प्रदान का सशक्त माध्यम अनुवाद **डॉ. विजया दिगंबरराव गाढवे**	१३१
३७	हिंदी पत्रकारिता और रोजगार के अवसर **डॉ. दिलीपकुमार रा. गुंजरगे**	१३४
३८	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और उच्च शिक्षा का स्वरूप **डॉ. दत्ता शिवराम साकोले**	१३७
३९	रोजगार के स्वर्णिम अवसर उपलब्ध कराती हिंदी **डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे**	१४१

21

हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर

डॉ. संजय जोशी
व्यंकटेश महाजन महाविद्यालय,
धाराशिव

Research Paper - Hindi

भाषा मूलतः मनुष्य जीवन के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धी है। यह मानव सभ्यता का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसी कारण से आज मनुष्य सृष्टी के अन्य पशु पक्षीयों से विशेष है और अलग भी रहा है। भाषा मानव जीवन के संवाद का माध्यम है जिसमें भाव, विचार इत्यादी का समावेश होता है। भाषा के बिना जीने और आगे बढने का सोचा भी नही जा सकता है। आज मनुष्य ने जो कुछ भी विकास का स्वरुप तैयार किया है उसके मूल में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। मूलतः भाषा का इतिहास बहुत प्राचीन है। इसकी उत्पत्ती के संबंध में विद्वानो के पास कोई ठोस ऐसा जवाब नही है की कहा जाये भाषा की जन्म कहानी यह है। केवल भाषा उत्पत्ती संबंधी मतो को प्रस्तुत किया जाता रहा है। इसकारण विभिन्न विद्वानों के भाषा निर्मिती सिध्दांतो की बात बताई है। लेकिन इसमे भी कोई बात सामने नही आयी दिखाई देती है। जिसका कोशीय अर्थ कहना या प्रकट करना संभव नही। भाषा इस विषय को पारिभाषिक करने का प्रयास प्राचीनकाल से किया गया है। जिससे इसका अर्थ समजने का प्रयास किया गया है। प्राचीन काल में 'महर्षि पतंजलि' ने 'व्यक्ता वाचि वर्णा येषां त इमें व्यक्त वाचः' कहा है जिसके अनुसार जो वाणी वर्णो मे व्यक्त होती है उसे भाषा कहते है। कालान्तर में भारतीय और पाश्चात्य विद्वानोंने विभिन्न मतो को प्रस्तुत किया है। जिससे भाषा को परिभाषित किया जासके भाषा जहां मनुष्य की अर्जित संपत्ती है, वही सामाजिक संपत्ती भी है। भाषा नदी की तरह होती है जो सतत प्रवाहमान रहती है। इसलिए परिवर्तनशीलता भाषा का प्रमुख गुण है। आज विश्व में हजारो लाखो भाषाएं बोली जाती है। जिसमें विभिन्न अंगो से हमेशा परिवर्तन हो रहा है। भारत देश की महत्त्वपूर्ण भाषा हिन्दी है यह भी प्राचीनकाल से मनुष्य जीवन के लिए विचारो और भाव-भावनाओं का और व्यवहार का महत्त्वपूर्ण माध्यम रही है।

हिन्दी भाषा ने विभिन्न सोपानो से होकर आज व्यापक स्वरुप धारण किया है। इसका इतिहास संस्कृत भाषा से जुडा हुआ है। हिन्दी की जननी संस्कृत भाषा है। जिसने पहले वैदिक संस्कृत फिर लौकिक संस्कृत फिर पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषा के पडाव को पार कर लिया प्राचीन भारतीय आर्यभाषा, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा का समय रहा जिससे होकर आधुनिक भारतीय आर्यभाषा के रुप में हिन्दी विकसित होती गई। आज विभिन्न प्रांतो और बोलीयों के रुप में यह प्रवाहमान है। यह अठराह से बीस के आसपास बेलियों में आज दिखाई देती है। जिसकी शाखायें प्रांतो में भले ही हो लेकिन यह हिन्दी का ही व्यापक रुप धारण करती है। आज इस भाषा ने केवल भारत देश में नही विदेशो में भी अपना स्थान बनाया है। लोगों के संवाद और व्यवहार के रूप में आज यह गतिमान दिखाई देती है। आज यह गतिमान दिखाई देती है। आज हिन्दी भाषा के विविध रुप विद्यमान है जिसमें संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा राजभाषा, माध्यम भाषा, संचार भाषा इत्यादी रुप में प्रवाहमान है। भारतीय संविधान के अनुसार हिंदी भारत की राजभाषा है। आज हिन्दी भाषा केवल संवाद का या विचारों का माध्यम नही है। वह रोजगारभिमूलक हो गई है। उसका एक प्रजोजनमूलक रुप भी विद्यमान है। जो व्यवहारिक रुप के माध्यम से पहचाना जाता है। जो मनुष्य के लिए

रोजगार के अवसर भी प्रदान कर रही है। मूलत: भाषा सभी तरह के शिक्षण का माध्यम होती है। भाषा की कमजोरी शिक्षण के उद्देश पूर्ती में सबसे बडी बाधा है। इसिलिए शिक्षण प्रक्रिया में भाषा शिक्षण का महत्त्व अधिक है। जिसके द्वारा मनुष्य के कुशलता का विकास किया जा सकता है।

वर्तमान समय में हिन्दी भाषा के क्षेत्र में विभिन्न रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे है। इस भाषा ने प्रयोजनमूलक रुप धारण किया है। जो भाषाविदो द्वारा गठित एक सशक्त व्यवहारीक साधन माना जाता है। इससे आर्थिक, व्यवसायिक, वैज्ञानिक और प्रशासनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो रही है। हिन्दी भाषा के दृष्टी से 'वैज्ञानिक और तकनिकी हिन्दी' यह एक महत्त्वपूर्ण रुप है। जिसमें हिन्दी भाषा के माध्यम से रोजगार के अवसर आज उपलब्ध है। इसमें भौतिक, रसायन, वनस्पति, जीवविज्ञान, इन चार शाखाओं से संबंधीत भाषा और इंजिनियरी, प्रेस, फॅक्ट्री आदी में प्रमुख भाषा रुप आते है। साथ ही प्रशासनिक या कार्यालयी हिन्दी के क्षेत्र में व्यवहारीक हिदी भाषा का दायरा बढ रहा है। जो विभिन्न दफ्तरी कामकाजो से संबंधित है। इसकी साक्षरता भी अच्छा विषय रोजगार के दृष्टी से हो सकता है और वह उपयोग में भी लाया जा रहा है। इसमें विभिन्न सरकारी और अधसरकारी कार्य होते है। राजनीतिक, आर्थिक, सुरक्षात्मक, सामाजिक, साहित्यिक, कामकाजी विषयों का ज्ञान प्राप्त कर यह कार्य भाषायी जगत में होता है। विधी की हिन्दी यहां कानूनी और विधी की हिन्दी के माध्यम से यह कार्य सिख कर रोजगार का मौका प्राप्त किया जाता है। क्योकी इसमें प्रयुक्त हिन्दी भाषा भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती दिखाई देती है। संविधान, अधिनियम, नियम, आदेश, अनुबंध, करार यह क्षेत्र हिन्दी भाषा शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण हो सकते है। वाणिज्य और व्यावसायिक हिन्दी यह क्षेत्र प्रयोजनमूलक हिन्दी का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इसका प्रयुक्ति क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया है। इसमें ग्रामीण बाजारों से लेकर अंतर्राष्ट्रिय कंपनियों तक विविध माध्यमों से प्रसारीत विज्ञापन की गतिविधीयां वाणिज्य, व्यवसायिक हिन्दी के अंतर्गत आती है। यह एक रोजगार का महत्त्वपूर्ण अवसर हिन्दी भाषा उपलब्ध करती है। साथ ही जनसंचार माध्यमों की हिन्दी भाषा लोकजागरण विचारों का भाव का संप्रेषण कार्य जनसंचार माध्यम का ही महत्त्वपूर्ण तरीका है। यह संदेश, मुद्रित, साहित्य, इलेक्ट्रिक मीडिया, पत्र, पत्रिकायें, आकाशवाणी, दूरदर्शन इत्यादी हिन्दी भारत देश की राष्ट्रभाषा, एवं संपर्क भाषा होने से इन माध्यमों की वह प्रमुख भाषा रही है। अत: इसके माध्यम से भी रोजगार का अवसर प्रदान होता है।

उपर्युक्त सेवा प्रयोजनमुलक हिन्दी के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त भी हिन्दी एक महत्त्वपूर्ण भाषा है जो विभिन्न क्षेत्रो मे रोजगार के अवसर उपलब्ध करके दे रही है। यह व्यवहारीय कार्य और क्षेत्र दिन-ब-दिन बढता ही जा रहा है। वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा का जो महत्त्व है। उसमें व्यवसाय, संचार, माध्यम, विज्ञान तथा तकनिकी और राजभाषा के रुप में विकास की जो नई संभावनाएं है। ये रोजगार के क्षेत्र भी है। जिसमें प्रमुख हिन्दी भाषा एक व्यवसायिक आधार है। इस भाषा की प्राप्ती के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण शिक्षागत कार्य से यह रोजगारभिमूलक हो सकती है। जिसमें इसकी शब्द संपदा, विशेष शब्दावली, समांतर शब्दावली, वाक्यविन्यास, अनुवाद प्रधानता इत्यादी विशेषणाओं को आत्मसाथ करना भी इसमें जरूरी होता है।

हिन्दी भाषा केवल राष्ट्रभाषा के रूप में नही है। वह सभी को रोजगार के अवसर प्रदान करती है। साथ ही वह एकता और प्रेरकता की भाषा भी है। मीडिया, हिन्दी के अधिकारी, अनुवादक, फिल्म तथा तकनिकी क्षेत्र की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका हिन्दी भाषा के माध्यम से प्रदान की जाती है। इसके लिए विभिन्न उपाधियों के साथ रचनात्मक और फलात्मक लेखन में सजग होना भी जरूरी है। भारत के कई राज्यों में हिन्दी को अधिकारीक भाषा के रुप में मान्यता मिली है। विश्वभर में जिसप्रकार हिंदी भाषा की लोकप्रियता बढ रही है। उसी प्रकार इसमें रोजगार के अवसर भी बढ रहे है। हिन्दी भाषा में काम करना आज अनिवार्य हो गया है। हिन्दी विभागों में केंद्रिय और राज्य सरकारों की इकाइयों में हिन्दी अधिकारी हिन्दी अनुवादक, हिन्दी सहाय्यक, प्रबोधक, अधिकारीक भाषा के कई पद होते है। भाषा अब केवल राजभाषा के दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नही बल्कि वह अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी है। प्रिंट मीडिया सहित कई सरकारी

विधाओं में अनुवादक और हिन्दी लेखक के रुप में मौके उपलब्ध है।

कुलमिलाकर आज देश के साथ ही अन्य देशो में रोजगार के विविध अवसर प्राप्त होते है। इसमे वित्तीय और रियल इस्टेट तथा पत्रकारीता के क्षेत्र, राजभाषा अधिकारी, अध्यापन का क्षेत्र, रेडिओ जॉकी और समाचार वाचक के रुप में, अनुवादक और दुभाषिया, रचनात्मक लेखन, कॉम्प्युटर के क्षेत्र इस क्षेत्रों के अलावा अन्य विविध क्षेत्रों में हिन्दी भाषा के अवसर उपलब्ध हो सकते है और हो रहे है। इसके माध्यम से भाषा के विकास भी करवा सकता है। ऐसा कहा जा सकता है की हिन्दी विविध रुपों के माध्यम मे भी काम हो रहा है।

विविध प्रतियोगिता के माध्यमसे शिक्षा प्राप्त विद्यार्थीयों को विभिन्न क्षेत्रों मे रोजगार की संभावणाएं अधिक बढ गई है। जिससे हिन्दी भाषा के विकास के साथ भाषा के कारण रोजगारभिमूलकता बढ गई है। इसमें बँकींग का क्षेत्र भी महत्त्वपूर्ण है, बँकों का राष्ट्रीयकरण होने एवं राजभाषा नीति के लागू होने के बाद बैंको में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग बहुत बढ गया है। इनमें से कुछ कार्य प्रयासों से हासिल होते हे। तो कुछ हिन्दी भाषा ने स्वाभाविक रुप से हासिल किए हे। हिन्दी भाषा प्रयोग के दृष्टि से आधुनिक काल में प्रयुक्त जनसंचार माध्यमों से भी हिन्दी भाषा रोजगार की संभावणाएं निर्माण करती है। जिसमें हम, विभिन्न माध्यमों के नाम ले सकते है। डाक माध्यम, मुद्रण माध्यम, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, दृश्य-श्रव्य में दूरदर्शन एवं फिल्म कम्प्युटर और इंटरनेट इत्यादी.

संदर्भ संकेत :-

1. सामान्य हिन्दी : डॉ.आदिनाथ सोनटक्के
2. संप्रेषणमूलक व्यावसायिक हिन्दी : सं.हिन्दी पाट्य समिति डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्याल, छत्रपती संभाजी नगर.
3. भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा : डॉ.लक्ष्मीकान्त पाण्डेय

ISSN 2229-4406

Published, Printed, Owned by Sow. Mahananda B. Kamble & Edited by Prin. Dr. Haridas Fere & Printed at Indo Vision Offset, Binding & Published by Indo Asian Publication 'Gyandev - Parvati', R-9 / 139/6, Near Vishal School, L.I.C. Colony, Pragati Nagar, Latur. Dist. Latur-413531 (M.S.) India.

ISSN 2229-4406

Editor In Chief : Prin. Dr. Haridas Fere